इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

सौभाग्य दायिनी सहस्त्ररूपा लक्ष्मी व्यापार वृद्धि साधना

18 जून, निर्जला एकादशी

जीवन की श्रेष्ठता है श्री सम्पन्न होना, यह वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक आवश्यकता भी है। 'लक्ष्मी' सम्पन्न होना प्रत्येक पुरूष के लिये आवश्यक है, चाहे वह किसी भी वर्ग, धर्म, जाति का हो, आज का मानव 'लक्ष्मी' को प्राप्त करने हेतु अनेक प्रकार के पुरुषार्थ करता है। परन्तु यदि एक ही पुरुषार्थ के द्वारा लक्ष्मी के सहस्त्र स्वरूपों की प्राप्ति एक साथ हो जाय, तो... इस अद्वितीय साधना के माध्यम से ऐसा सम्भव है। आप स्वयं इसका अनुभव कर लें।

श्री जगन्नाथ अमृतपान प्रयोग

22 जून, देव स्नान पूर्णिमा

मात्र शरीर का बाह्य स्वास्थ्य ही आवश्यकता नहीं है, अपितु इसके साथ ही साथ आन्तरिक एवं बौद्धिक रूप से स्वस्थ एवं उन्नतिशील होना भी आवश्यक है, श्रेष्ठ विचार, श्रेष्ठ क्रिया पद्धति, श्रेष्ठ भावनाएं, श्रेष्ठ चिन्तन आदि ही श्रेष्ठ व्यक्तित्व की पहचान हैं। इन गुणों को जीवन में उतार कर ही श्रेष्ठता के मार्ग पर अग्रसर हुआ जा सकता है। यह प्रयोग इस दृष्टि से अत्यन्त श्रेष्ठ एवं अद्वितीय है।

शिव कृपा युक्त पूर्णत्व प्राप्ति प्रयोग

03 जुलाई, प्रदोष व्रत

व्यस्त जीवन, कार्य भार एवं कर्तव्यों के बोझ से व्यक्ति का जीवन एक मजदूर सा हो जाता है और वह तनावों से चिन्ताओं से ग्रस्त हो जाता है और कई बार तो वह **मानसिक रोगी** तक भी हो जाता है। इस योग के माध्यम से ध्यान की गहराई में उतरना प्रारंभ करेंगे, जिस प्रकार भगवान शिव शान्त चित्त रहते हैं, उनकी कृपा से आप व्यस्त रहते हुए भी प्रफुल्लित रह सकेंगें, शांति का अनुभव कर सकेंगे। एक तरह से यह चिन्तामुक्ति व आनन्द सिद्धि प्रयोग भी है। इस प्रयोग को जिस भी साधक ने अपने जीवन में अपनाया उसने अनुभव किया कि इस प्रयोग के दिव्य मंत्र द्वारा स्वतः ही उसके जीवन के अभाव, परेशानियां दूर होते जा रहे हैं।

भगवती पार्वती वर प्रदायिनी प्रयोग

19 जुलाई, जया पार्वती व्रत प्रारंभ

भगवती पार्वती सारी शक्तिओं के मुख्य हैं, जो की आद्याशक्ति हैं। उनकी साधना का अर्थ है जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना जो कि आपका अभीष्ट है। उनकी साधना के पश्चात यह संभव ही नहीं कि कोई इच्छा अपूर्ण रह जाए। भगवती पार्वती तो साधकों की कामनाओं की पूर्ति के लिए अपने वरदानों की झोली देती है, प्राप्त करना न करना तो फिर साधक की अपनी क्षमता पर निर्भर है, यदि पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ इस प्रयोग को गुरु के आशीर्वाद से संपन्न कर लिया जाए तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है। भगवती पार्वती प्रयोग वास्तव में साधकों के लिए अतुलनीय है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।